श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बेगू (शहर)

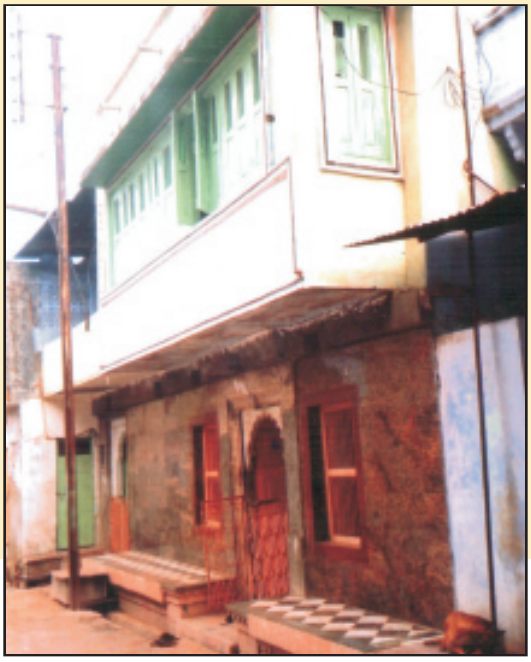

यह पाटबंद मंदिर चित्तौडगढ़ से 50 किलोमीटर दूर शहर के मध्य में स्थित है। कथनानुसार यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन मानते हैं। उल्लेखानुसार सं. 1781 का निर्मित है। यह यति का मंदिर था, जिसकी यति श्री रतनलाल जी द्वारा देखरेख की जाती थी, 50 वर्षों से समाज को सुपूर्द किया। पूर्व में यति का मकान व उपाश्रय रहा है। बेगूं की जागीरी सत्यव्रत चूण्डा मुख्य वंशधर खेंगार के पुत्र गोविन्ददास की दी गई है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1421 का लेख है।
2. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1860 फाल्गुण सुद का लेख है।
3. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री सम्भवनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

2–3–4 श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.3'' , 3'' , 2'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5. श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2048 का लेख है।

6. श्री धर्मनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2038 का लेख है।

7. श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची **पंचतीर्थी** प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

8.–9 श्री ताम्रपत्र यंत्र 9'' x 7'', 3'' x 2'' मंत्र युक्त है।

10. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2048 का लेख है।

11. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर सं. 2038 का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच प्रासाद देवी स्थापित है।

दोनो ओर आलिओं में :

1. श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2053 का लेख है।

2. श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2053 का लेख हैं।

बाहर सभामण्डप में :

श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। **क्षेत्रपाल की दो प्रतीक प्रतिमाएँ 11'' ऊँची स्थापित है।** मंदिर में सुन्दर कांच की जड़ाई की हुई है।

वार्षिक ध्वजा दिनांक 4 दिसम्बर को चढ़ाई जाती है।

देखरेख समाज के निम्न प्रतिनिधि करते हैं।

1. **श्री अभयकुमार पंचोली, मोबाइल : 94607 51178**
2. **श्री गुलाबसिंह जी पगारिया, मोबाइल : 94686 59746**

श्री महावीर भगवान का मंदिर, बेंगू (किला)

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौडगढ़ से 50 किलोमीटर व बेगूं शहर से ऊपर 2 किलोमीटर दूर राजमहल के पास स्थित है। कहा जाता है कि यह मंदिर 500 वर्ष पुराना है। यह मंदिर यति जी का ही रहा है, ऊपर यतिजी का उपाश्रय है। मेवाड़ का यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है तथा यहाँ के शासक मेघावत वंश कहलाते हैं तथा इनका पाग के बंद चूण्डावती है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा पर लेपन किया गया है, लेख स्पष्ट नहीं होता। यह प्रतिमा बम्बावड़ागढ़ (जोगणिया माता) से लाई गई है।

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1869 का लेख है।
3. श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। नीचे की वेदी पर श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1662 का लेख है। नैत्र (चक्षु) नहीं हैं। कांच की सुन्दर जड़ाई की हुई है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1468 का लेख हैं।

2. श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख हैं।

3. ताम्रपत्र यंत्र गोलाकार 6'' ऊँची है। इस पर संवत् 1985 का लेख है।

बाहर क्षेत्रपाल की प्रतीक प्रतिमा स्थापित है। **वार्षिक ध्वजा भाद्रपद सुदि नवमी को चढ़ाई जाती है।** मंदिर की व्यवस्था समाज की ओर से श्री विजय जी नागोरी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9413895707

श्री रत्नप्रभ गुरू मंदिर बेगूं (किला)

यह पाटबंद मंदिर बेगू किले की ओर महावीर भगवान का मंदिर जाने के मार्ग पर स्थित है। इसमें श्री रत्नप्रभ सूरि की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित हैं।

संयोग इकट्ठा करने में लोग
समय बिगाड़ते हैं
जबकि संयोग तो कुदरत ही
इकट्ठा कर देती है।

श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बरसी

यह घूमटबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। पूर्व में यह यति जी का शांतिनाथ भगवान का मंदिर था। वर्तमान में भी यति जी का उपाश्रय व मंदिर समाज के पास ही हैं। वर्तमान के सम्भवनाथ भगवान का मंदिर की भूमि श्री रोशनसिंह जी दलपति सिंह जी व चन्द्रसिंह जी कोठारी द्वारा भेंट दी व निर्माण कराया गया। पूर्व का मंदिर 500 वर्ष प्राचीन है। जिसकी स्थापित प्रतिमाएँ नूतन मंदिर में स्थापित की गई। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहां के शासक सांगावत कहलाते हैं।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संव् 2054 का लेख हैं।
2. श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2052 का लेख है।
3. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2054 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1678 का लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

धातु की :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1593 ज्येष्ठ वदि 3 का लेख है।
3. श्री सम्भवनाथ भगवान की 9'' ऊँची **पंचतीर्थी** प्रतिमा है। इस पर संवत् 2045 वैशाख सुदि 5 का लेख हैं।
4. श्री नेमिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। यह आचार्य जितेन्द्रसूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित है।
5. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर सं. 2044 का लेख है।
6. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर सं. 2045 वैशाख सुदि 5 का लेख है।
7. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 2.5'' का है। इस पर संवत् 2054 माघ सुदि 13 का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच प्रासाददेवी स्थापित है।

आलिओं में दाहिनी ओर :

1. श्री त्रिमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2055 का लेख हैं।

बाई ओर :

1. श्री दुरितारी यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2055 का लेख है।

आलिए में – गुरू पादुका 12''x 8'' के पट्ट पर स्थापित है। इस पर अस्पष्ट लेख है। **श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।** मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर आलिए में – श्री रत्नप्रभ सूरि की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा मगसर सुदि 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री चन्द्रसिंह जी कोठारी द्वारा स्थानीय स्तर पर श्री नरपत जी कोठारी द्वारा की जाती है।

श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, पारसोली

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 30 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। पूर्व में यह घूमटबंद श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर उल्लेखानुसार 300 वर्ष प्राचीन है। वर्तमान में नूतन जिनालय बनाकर प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई। यहां मेवाड़ का प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है तथा यहां के शासक श्रीरामचन्द्र चौहान के वंशज हैं तथा पाग के बंद अमरशाही हैं। इनकी राव की उपाधि है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 15 का उल्लेख है।

2. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2050 चैत्र शुक्ला 4 का लेख हैं।

3. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2050 का लेख है।

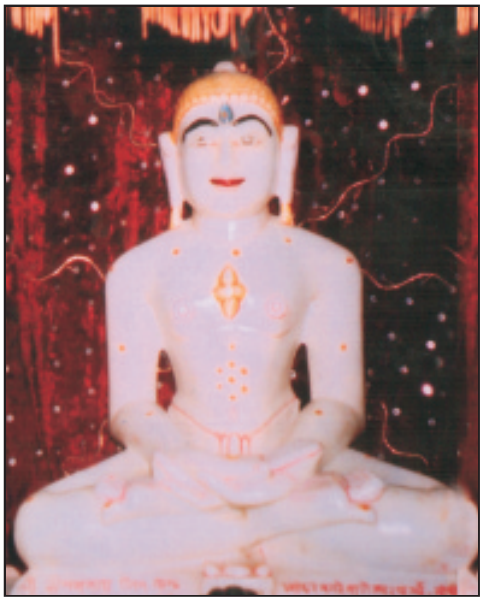

मूल वेदी के नीचे की वेदी पर श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री पद्मावती देवी की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1929 का लेख ह।
2. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर संवत् 2052 वैशाख शुक्ला 4 का लेख है।

वेदी के दीवार के बीच श्री प्रासाद देवी की श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

सभामण्डप में बाई ओर :

1. श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री रत्नप्रभ सूरि की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

दाहिनी ओर :

1. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

आगे की ओर :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' **ऊँची** प्राचीन प्रतिमा है। इस पर संवत् 2052 ज्येष्ठ शुक्ला 11 का लेख हैं।
2. श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।
4. श्री सम्भवनाथ भगवान की 8'' ऊँची **पंचतीर्थी** प्रतिमा है। इस पर संवत् 2052 द्वितीय वैशाख शुक्ला 4 का लेख है।

ग्राम के सदस्यों के अनुसार ग्राम 125 वर्ष प्राचीन है। इसमें दो प्रतिमाएँ प्राचीन है, शेष नूतन है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री गौतमकुमार जी पीतलिया द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 01474-230419

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, बिछोर (भिचोर)

यह घूमटबंद मंदिर चित्तौड़ से 30 किलोमीटर दूर है। उल्लेखानुसार यह 300 वर्ष प्राचीन है। पूर्व में शान्तिनाथ भगवान का मंदिर था।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ व यंत्र स्थापित हैं :

1. श्री चन्द्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट घिसा हुआ लेख है, केवल 'उसवाल' पढ़ने में आता है।

2. श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री सुमतिनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 2045 वैशाख सुदि 5 का लेख है।
4. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर संवत् 2045 वैशाख सुदि 5 का लेख है।

5. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर संवत् 2045 का लेख हैं।

6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1511 का लेख है।

7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.3'' की प्रतिमा है।

पूर्व में जीर्णोद्धार सं.2006 में सम्पन्न हुआ। वर्तमान में जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। ध्वजा दण्ड टूटा हुआ है। **वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है**। व्यवस्था संग्रहित धन 2.00 लाख के ब्याज की राशि से की जाती है।

समाज की ओर से देखरेख श्री बसन्तीलाल महता व श्री महावीर जी महता करते हैं।

सम्पर्क सूत्र - 9799102359, 9982774740

भिखारी को कुछ देना ही,
ऐसा कायदा नहीं है, लेकिन
'तिरस्कार'तो कभी नहीं करना चाहिए ।

श्री अरनाथ भगवान का मंदिर, नंदवई

यह पाटबंद मंदिर चित्तौड़ से 35 किलोमीटर दूर है। यह 200 वर्ष प्राचीन शांतिनाथ भगवान का मंदिर था। यह जिले में एक ही मंदिर है जहां पर श्वेताम्बर व दिगम्बर प्रतिमाएँ विराजमान है। दोनो समुदाय के सदस्य संयुक्त रूप से मिलकर कार्य करते है, पूजा अर्चना करते हैं। पूर्व में शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा चोरी हो जाने से श्वेताम्बर प्रतिमा श्री अरनाथ भगवान की विराजमान कराई गई। एक प्रतिमा चित्तौड़गढ़ से, एक बिजौलिया से लाकर विराजमान कराई गई।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री अरनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2054 फाल्गुण कृष्णा सुदि 3 का लेख है। (यह दिगम्बर मूर्ति है)।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2054 का लेख है। (यह दिगम्बर मूर्ति है)।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :

1. श्री अरनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3. तांबे का गोलाकार श्री यंत्र 7'' का है। इस पर सं. 1694 माघ सुद 5 का लेख हैं।

4–6 नवकार मंत्र का ताम्बे का पत्र 3.3'' ऊँचा है। माणिभद्र की (क्षेत्रपाल) की 10'', 7'' व 7'' ऊँची प्रतिमा है।

ग्राम में 4 श्वेताम्बर व 2 दिगम्बर समाज के सदस्य रहते हैं। **मंदिर का खेत है, दुकाने हैं, पीछे खुली जगह है।**

समाज ओर से व्यवस्था श्री कैलाश कुमार जी करते हैं। चार्ज श्री कैलाश जी जैन के पास है।

सम्पर्क सूत्र - 01474-252311

पूरा जगत लक्ष्मी को स्थिर करने
की कोशिश में लगा हुआ है लेकिन
लक्ष्मी जाने के लिए ही आई है
और आने के लिए ही जाती है।